लवहरि-कुशहरि : स्वरूप ओ मौलिकता

मिथिलाक लोककंठमे जे मैथिली लव-कुश-गाथा पाओल जाइत अछि, तकर तीनटा स्वरूप हमरा भेटल अछि। एहिमे पहिल अछि *मकरन्दा-मलाही*। कहल जाइत अछि जे मकरन्दा गामक एकटा मलाहकेँ ई सपनौती द्वारा प्राप्त भेलैक।

ई स्वरूप सहस्र-रावण-वध, रावणक चित्र देखि राघवक रोष, सीता-वनवास, लवकुशक जन्म, लवकुशक शिक्षा, लवकुशक हाथेँ रामक पराजय, हनुमानक वन्दी बननाइ, राम-सीता-वार्त्ता, सीताक पाताल-प्रवेश तथा जाहि ठाम सीता पाताल-प्रवेश कयने छलथिन ओहिठाँ एकटा पद्मक प्रस्फुटित भेनाइ आदि घटनाकेँ बड़ विलक्षण क्रमसँ उपस्थित करैत अछि आ सर्वथा मौलिक रूपमे व्यक्त भेल छि। ई तीन खंडमे अछि, अयोध्या खंड, वन-खंड आ कमल-खंड।

दोसर सरूप कहबैत छैक *सुगी-समाद*। एकर कथा-आयोजन बड़ विलक्षण छैक। राजमाता कौशल्या गंगा-तटपर मास कऽ रहलि छथि। सहसा एक दिन अयोध्याक कुशल बूझऽ ले' व्याकुल भऽ उठैत छथि कि हुनक दृष्टि आगूक चानन-वृक्षक ठारिपर बैसलि एकटा अपूर्व सुगीपर जाइत छनि। ओ ओहि सुगीकेँ सरस्वती रूप बूझिकऽ प्रणाम करैत छथि।

सुगी हुनक आदर करैत कहैत छथिन, ''हे माता, बियनिपर सीता द्वारा बनाओल रावणक छवि देखिकऽ, श्री राम गर्भवती सीताकेँ बोन पठा देलथिन अछि।''

किछु समयक उपरान्त राजमाता कौशल्या अयोध्याक राजभवन आङनमे चाननक बिरिछतर अयोध्या-राजवंशक उत्तराधिकारी ले' चिन्तित भऽ रहलि छथि कि वैह सुगी आबिकऽ आगूक चानन-ठारिपर बैसि गेलि।

राजमाता हुनक अभ्यर्थना कयलनि, ''हे सरस्वती-रूप सुगी, कने कहू जे वनवास मे हमर पुतऽहु सीता-रानी जीवैत छथि कि नहि। आइ अयोध्याक राजसिंहासन ले' अगिला उत्तराधिकारी नहि देखि रहल छिऐक। रानीक आँचर दूध-फूलसँ भरलनि कि नहि ?''

''हे राजमाता, शुभ संवाद लियऽ। वनमे ''सीतारानी सकुशल छथि अहाँक पौत्र जन्म लेलक अछि।'' सुगी उत्तर देलकनि।

"जाउ हे सुगी, ई मंगलमय समाचार राजारामकेँ सुना दियौनि। ओ मणिमाणिक्यसँ पाँखि मढ़बा देताह।" हुलसित स्वरमे राजमाता बजलीह।

"नहि हे राजमाता।" सुगी मुँह टेढ़ करैत छथि, "सीतारानी ई संवाद राजमातासँ कहऽ कहलनि अछि, राजा राम-सन पाथर-करेजवला पुरुषसँ नहि।"

राजमाता एक दिन अत्यन्त चिन्ताक अवस्था मे बैसलि सोचि रहलि छलीह, *असमेध (अश्वमेध)*क घोड़ा एखन धरि नहि घुरलैक अछि। अयोध्याक अजय सेना नहि घुरलैक। शत्रुघ्न, लक्ष्मण, भरत, हनुमान आ राम क्यो ने घुरलाह अछि। केहेन प्रचण्ड शत्रुसँ भेट भऽ गेलनि से के कहय! हे देवता, हे पितर, कहुना सभ भाइ सकुशल होथि।"

तखने हुनक दृष्टि ओही चानन-ठारिपर बैसलि ओही सुगीपर पड़लनि।

"हे सरस्वती-रूप सुगी, हमर चिन्ताक निवारण करू। चारू भाइ, चतुरंगिणी-सेना आ अश्वमेधक घोड़ाक कुशल सुनाउ।" कौशिल्या अनुनय कयलथिन।

"हे पुण्यमयी राजमाता", सुगी उत्तर दैत छनि, "आब कहुना सभ नीके। अयोध्याक अजेय सेना, शत्रुघ्न, लक्ष्मण, भरत ओ राजा राम रणभूमिमे सभ मूर्छित भऽ गेल छलाह। वीर हनुमान बन्दी बना लेल गेल छलाह।"

चिहुँकि उठलीह कौशिल्या, "एहन तेजस्वी शत्रु के छल ?"

"सीतारानीक बेटा, अहाँक दुनू किशोर पौत्र हे माता। नाम भेलनि लव आ कुश।"

रोदनाकऽ उठलीह कौशल्या माता, "आ हा हा! किएक ने! रघुवंशक पोआ होइते छैक ओहने, किन्तु ओहि दुनू नेनाकेँ क्यो बूझौलकनि नहि जे ओ लोकनि अपने बाप-पित्ती छथिन। अयोध्याक राजपाट हुनके छियनि। चतुरंगिनी सेना आ अश्यमेघक घोड़ा हुनके छियनि।"

"नहि हे माता, ओहि दुनू बौआकेँ नहि बुझबा जोकर भेलनि जे बापे-पित्तीसँ युद्ध कऽ रहल छी ?" सुगीक उत्तर।

"जेना सहस-रावणक संग भेल, की हमर जनकपुरवाली कनियाँ स्वयं रणचंडी बनिकऽ ओहिना युद्धकऽ रहलि छलीह अपन नेना सबहिक पक्षमे ?" कौशल्या प्रश्न कयलथिन।

"नहि हे राजमाता, भगवती सीताकेँ किछु नहि बूझल जे हुनक दुनू लाल खेल-खेलमे की कऽ रहल छथि। ओ तँ हनुमानजीकेँ जखन ओ दुनू भाई पकड़िकऽ लेने अयलथिन तँ भगवती हाहाकार कऽ उठलीह। तखन हनुमानजी सभटा वृत्तान्त कहलथिन जे सेना सहित चारू भाइ धराशायी भेल छथि। तखन माइक आज्ञा सँ

लव-कुश अपन वाण-वर्षा सँ स्वर्ग कैं बेढ़ि देलनि। इन्द्र-वरुण हाथ जोड़ने अयलाह। सीताजीक आज्ञासँ अमृत-वर्षा कराओल गेल। सभ उठिकऽ ठाढ़ भेलाह आ आश्रम अयलाह। महर्षि वाल्मीकिकैं प्रणाम कयलनि। सभकैं सभ यथायोग्य अभ्यर्थना आ आदर कयलनि। लव-कुशक परिचय देल गेल।''

राजा राम सीताक आदर करैत हुनकासँ अयोध्या राजसिंहासन ले' उत्तराधिकारी मङलथिन।

सीता विनम्रतापूर्वक उत्तर देलथिन, ''जे राज अपन उत्तराधिकारी कैं एक बाटी दूध-भात, एक पाटी अक्षर, एक तरकश सरपतोक वाण आ एकटा बसहो *(बाँसक)* धनुष नहि दऽ सकलैक ताहि राजसिंहासन-दिस लव ओ कुश घुरियो कऽ नहि तकताह। जँ ई दुनू भाइ अपन मैथिली माइक दूध पीने होयताह, जँ वैदेही मायसँ जनक-विद्या पौने होयताह आ नित्यप्रति शिवधनु, एम्हरसँ ओम्हर उठा-टारिकऽ आङन निपनिहारि जननीसँ अस्त्र-शस्त्रक शिक्षा पौने होयताह तँ इन्द्रक अमरावती जीतिकऽ सुख करताह आ अयोध्या-सनक कतोक राज एहि मेदनीपर स्वयं सिरजि लेताह।''

राम मौन रहि गेलाह।

वाल्मीकिक बुझौलापर सीता लवकैं वाल्मीकिक संग अयोध्या जयबाक अनुमति देलथिन।

तखन राम बजलाह, ''सीता एक बेर आर सतीत्वक परीक्षा देथि आ राज-राजेश्वरीक रूपमे अयोध्या चलथि।''

सीताक करेज जेना दरकि गेलनि। ओ बजलीह, ''हे धरती माता, ई अपमान असह्य अछि। परीक्षा जँ दू-दू बेर हो तँ ओ परीक्षा नहि, प्रताड़ना भेल, उपहास भेल। हमरा अयोध्याक राजनारी बनबाक लोभमे अपन दीप्तिमान सतीत्वक गरिमा, वैदेही-होयबाक महिमा आ मैथिल नारीत्वक आत्म विश्वासकैं हनन करबाक नहि अछि। माँ वसुन्धरे, जँ साँचे अहाँ हमर माय थिकहुँ तँ आबो अपन सिनेहमय कोरामे शरण दियऽ।''

तखने बिजलौका जकाँ लपकलैक आ धरती फाटि गेलैक। भूदेवी प्रकट भेलीह आ श्रीदेवी सीताकैं कोरमे लऽ कऽ विलीन भऽ गेलीह।

से हे कौशल्या माता, राजा राम चारू भाइ, दुनू पुत्र, वीर हनुमान, ऋषि-मुनि, चतुरंगिनी सेना आ असमेघ *(अश्वमेघ)*क घोड़ाक संग सकुशल आबि रहल छथि।''

''हा सीते, हा मैथिली, अयोध्यासँ अहाँकैं कहियो ने सुख भेटि सकल।'' माता कौशल्या विलाप करऽ लगलीह।

सीता-सपन:

लवहरि-कुशहरिक एहि स्वरूपमे जेना सीताक सहज नारीत्व मुखरित भऽ उठल अछि। एहि पर बौद्ध प्रभाव सेहो किछु परिलक्षित होइत अछि। एकरा तीन भाग मे बिकछाओल जा सकैत अछि—वन-जीवनमे लवकुश द्वारा अयोध्याक विजय आ संगीत द्वारा मृत रामकेँ ससैन्य जियाओल गेनाइ आ सीताक वाल्मीकि-आश्रमसँ आबिकऽ राम मुँह देखैत पाताल-प्रवेश। कहल जाइत अछि जे प्रत्येक बारह बरिसपर भगवती दिव्यसीता चैत रामनवमीमे जनकपुर अबैत छथि आ कोनो-ने-कोनो मैथिलानीकेँ सपनमे दर्शन दऽ कऽ अपन जीवनक कोनो-ने-कोनो खेहरा कहैत छथिन, तेँ ई स्वरूप कहौलक सीता-सपन।

लवहरि-कुशहरिक एहि तीनू स्वरूपमे वाह्य रूपेँ थोड़ेक अन्तर रहितो एकटा सुदृढ़ आन्तरिक एकता छैक। ई एकता भेल भगवती सीताक स्वयं प्रभु-चरित्र। लवहरि-कुशहरिमे ओ रामक छाया नहि छथि आ हुनक स्व-पूर्ण व्यक्तित्व विकसित होइत चल गेल अछि।

रामायण आ लवहरि-कुशहरि मे बड़ पैघ आ महत्त्वपूर्ण अन्तर अछि। विभिन्न प्रकार रामायण सभमे, केहनो आ कोनो रामायणमे सभठाँ राम नायक छथि। हुनकासँ अधिक उजागर आर क्यो नहि अछि। सभटा परिस्थिति हुनके शौर्य, उदात्त भावना आ दिव्य ऐश्वर्यकेँ जगजगार करऽ लेँ सुनियोजित होइत अछि।

सभ प्रकारक रामायणमे सीता, रामक अनुगामिनी छथि, अश्रुमयी छथि आ क्षण-क्षण रामक अपेक्षा रखैत छथि। कतहु-कखनो भावे-योगे हुनक व्यक्तित्व रामक पृष्ठभूमिमे दीपित भऽ पबैत छनि। ओना सगरे हुनक सहज नारीत्व दाबल-सैतल, कुण्ठित आ अश्रुमुख रहि जाइत छनि।

किन्तु, लवहरि-कुशहरिक सीता, सहस-रावणक वधसँ लऽ कऽ पाताल प्रवेश धरि, राम-मुक्त, स्वयं प्रभ आ स्वयं पूर्ण छथि। ई सीता, वनवासमे रहितो आत्म-विश्वास, आत्मगौरव आ सहज मातृत्वसँ ओतप्रोत छथि। राम-मिलनक कोनो उत्कंठा वा प्रतीक्षा नहि छनि हुनका। अपन सुरक्षा ओ अपने छथि आ एहि ले' आब हुनका अयोध्या-नाथ रामक ने भरोस छनि आ ने प्रयोजने।

लवहरि-कुशहरिक कोनो स्वरूप समस्त कथाक आलम्बन मात्र सीते छथि जनक-नन्दिनी-सीता नहि, लंकाक अशोक वाटिकाक अश्रुमुखी सीता नहि आ ने राम-बाम दिस सुशोभित होवऽवाली अयोध्याक राजराजेश्वरी सीता। ओ छथि अक्षोभ्य आत्म विश्वासक संग जीवन-संघर्ष करऽवाली सीता। एहि क्रममे महर्षि वाल्मीकि सेहो गौण पड़ि जाइत छथि। सीताकेँ ककरो अपेक्षा नहि छनि आ ने उपेक्षे

छनि। ओ वनपत्र, वनफूल आ वनफल संचय करैत छथि, गाय-दूहैत छथि आ अपन दुनू नेनाक पालन करैत छथि। हुनक सहज, सरल आ सिनेहमय मातृत्वक धारा कलकल छलछल प्रवाहित होइत अछि।

एहिना क्षणमे हुनक एकटा आर ज्योतिर्मय व्यक्तित्व प्रगट होइत अछि—ओ व्यक्तित्व अछि एकटा सफल शिक्षिका होयबाक। लवकुशकेँ ओ वेद-शास्त्र, संगीत ओ शस्त्र-अस्त्रक अनुपम शिक्षा दैत छथिन। दुर्लभ-जनक विद्या *(ब्रह्म-विद्या)*क शिक्षा सेहो दैत छथिन वैदेही। ओही जनक-विद्याक, जे विद्या जनबाक हेतु ऋषि, महर्षि आ विद्वान ओ योद्धा आकुल रहैत छलाह।

वनवासिनी सीता सम्पूर्ण अर्थमे आ सभ अर्थ मे वैदेही छथि। हुनक अपन नारीत्वक स्वाभिमान पृथ्वी जकाँ अडिग छनि।

लंकाक प्रज्वलित परीक्षा अग्निक ज्वालामे स्वर्णकमल जकाँ विहुसऽवाली सीता, सतीत्वक चरम परीक्षा देबऽवाली सीता, दोसर बेर सतीत्वक परीक्षा देबाक बातेँ सतीत्व आ नारीत्वक दुनूक उपहास बूझैत छथि आ रामसँ कहैत छथि, ''अयोध्याक राजरानी बनऽक लोभेँ, लोकबुझाओन करऽ ले' पुनः सतीत्वक परीक्षा दऽ कऽ अपने विश्वासक हम अपनहि उपहास नहि करब हे स्वामी। लियऽ, हमर आँचरक दुनू लाल। महान रघुवंशकेँ उत्तराधिकारी भेटौक। हम आब चललहुँ हे स्वामी।''

नारीत्व अपन अन्तिम प्रतिदान दऽ कऽ धरती मे समा गेल।

हमरा बुझने सहस्रो प्रकारक रामायण, राम-नामक हनुमान-नाटक आ राधव-ग्रन्थ आइ धरि भारतीय आदर्शक श्रेष्ठतम नारी व्यक्तित्वक नारीत्वक प्रतिपादन मिथिलाक जनकंठमे बसऽवला लोकगाथा लवहरि-कुशहरि द्वारा भेल अछि।

एहि जन-काव्यमे जे उज्वल आ अच्युत नारी सिरजल गेल अछि से समस्त भारतीय वाङमय मे दुर्लभ अछि।

पृष्ठभूमि ओ कथाक प्रगति

रामकथा वस्तुतः लंकाकाण्डक समाप्तिक संग समाप्त भऽ जाइत छैक। अयोध्यापतिकेँ अयोध्या घुरिते, रामकथाकेँ नमराबऽक कोनो खाँच शेष नहि रहि जाइत छैक। उत्तरकाण्डक झब्बा-झुब्बा आ गोटा-फुदनाकेँ मात्र एहि विशद कथाक समाप्ति-अलंकार *(फिनिसिंग डेकोरेशन)* कहबाक चाही। राम-कथा बड़ अदौ आ बड़ लोकप्रिय। एहि कथामे राम गृह अयोध्याक परिस्थिति *(होमलाइफ)* अविकसित रहि जाइत छैक आ समस्त कथा मात्र यात्रा आ युद्धक वृतान्त बनि कऽ रहि जाइत छैक। से रामकथाक चासनीक प्रिय जनमानस अपन दुःख-सुख आ हास-रुदनक

दैनिकी *(डेली लाइफ)*क विम्ब-छविक सुख ले' एहि कथाक बढ़ोत्तरीक इच्छा करैत छैक। लवकुश-कथाक पृष्ठभूमि किछु एहने छैक।

एहि कथाक प्रधान छथि—सीता, राम नहि। एकर एक टा विशिष्ट कारण छैक। भारतक चिरन्तन चिन्तनक मुख्यत: तीन धारा प्रवाहित रहलैक—वैष्णव, शैव आ शाक्तधारा। ई तीनू धारा एक दोसरक परस्पर विरोधी नहि भऽ कऽ एक दोसरक पूरक रहलैक। अपनालोकनिक संस्कृति ओ साहित्यक संरचना ओ विकासपर एहि तीनू चिन्तन-धाराक आइ धरि विपुल प्रभाव रहलैक अछि।

राम-कथामे, *हरि-हर कथा विराजित वेणी* तँ छैक, किन्तु शाक्तभावक अभाव छैक। कतहु शक्तिक स्वरूप जगजगार नहि भऽ पौलकैक अछि। लवकुश-काण्ड मने एकरे क्षतिपूर्त्ति करैत छैक सीताक द्युतिमान चरित्रकेँ आगू आनिकऽ। विशेषत: सीताक नैहर मिथिलाक लोक-मानस अपन लवहरि-कुशहरिमे अपन माँटि-पानि, चिन्तन-परम्परा आ लोकाचारक अनुकूल एकटा अभिनव सीताक सिरजन कयलक अछि जे विदेहभूमि, विदेहजनक आ विदेहगरिमाक पूर्ण प्रतिनिधित्व करैत शाक्त-साधनाकेँ उजागर करैत छैक। ई सीता, लोक-सीता *(पीपुल्स इमेज)* छथि, काज-सीता *(रोयाल ब्यूटी)* नहि।

रामायण-कथामे, सीताक व्यक्तित्व मात्र तिनिये ठाम प्रस्फुटित भेल छनि, पहिल रामक वनवास जयबाक काल, जखन सीता अयोध्या-निवासक सुख त्यागि कऽ रामक संग धऽ लैत छथि। दोसर, अशोक-वाटिकामे जाहि ठाम ओ रावणक प्रताड़न आ प्रलोभनक आगाँ अपन सतीत्व ओ आत्म विश्वासक संग अडिग रहि जाइत छथि। तेसर स्थल ओ थिक जाहि क्षणमे रामक शंका-निवारणक हेतु सीता अपन सतीत्वक अग्नि-परीक्षा दैत छथि। राम-पत्नी यशस्विनी सीताक गाथा एही ठाम समाप्त होइत अछि।

एहिसँ आगाँ सीता-चरितक विस्तार लोक-भावना द्वारा सर्वथा दोसर रूपमे भेल अछि। पृष्ठभूमि सहसा बदलि कऽ शाक्त रंगमे रङि जाइत अछि।

उड़िया *विलंका-रामायण* क अनुसार सीता काली-रूप धारण कऽ *लक्ष्य-शीर्ष-रावण* क वध करैत छथि। आनन्द रामायणक अनुसार सीता *शत-शीर्ष रावण*क वध करैत छथि आ तत्व-संग्रह-रामायणक अनुसार सीता द्वारा *शतानन रावण* क वध होइत अछि।

मैथिली-लोकगाथा लवहरि-कुशहरिक अनुसार सहस-मुख रावण, रामक अपन बाहु-पूजाक कालमे, अयोध्यापर भीषण आक्रमण कयलक। अयोध्या-किष्किन्धा आ देवसेना ओकर विकट प्रहारक आगाँ पराजित भऽ गेल। भरत, शत्रुघ्न, लक्ष्मण ओ राम सेहो समर-भूमिमे सुता देल गेलाह।

तखन, सीता रणचण्डीक वेषमे बहरयलीय आ मातलिक द्वारा संचालित रथपर बैसि कऽ प्रचण्ड युद्ध कयलनि आ सहस्र-मुख रावणक वध कयलनि।

लोकगाथामे, सीताकेँ रामक द्वारा वनवास पठाओल जयबाक मुख्य कारण, सहस-रावण द्वारा अपन पराजय, आ सीता द्वारा सहस्र-रावणक युद्धक रामक हृदय मे ग्लानि-भावना कहल गेल अछि। सभसँ बेसी हुनका अन्तरमे कुशक काँट जकाँ ई गड़ैत छनि जे एहन शक्तिशालिनी रहितो सीता लंकापति रावणक वध स्वयं किएक ने कयलनि ?

सीताक उत्तर छनि, मर्यादा पुरुषोत्तम प्राणनाथक जीवन अछैत हुनकासँ अगरजित भऽ कऽ एकटा सती नारी अपन शक्तिक प्रदर्शन कोना करितय ? ओ तेँ, सहस-रावणक द्वारा, पतिकेँ आसन्न मृत्युक स्थितिमे पाबि ओ शस्त्र उठौलनि, सहस-रावणक वध कयलनि आ अपन कनगुरिया आङुर चीरि ओहिमेसँ अमृत बहार कऽ, अपन स्वामी, समाङ आ सेनाकेँ जीवित कयलनि।

किन्तु रामक मोनक ग्लानि *(माष)* हुनक अन्तरमे नुड़ियाइत रहलनि आ हुनका चँछैत रहलनि।

एहि ग्लानिक पृष्ठभूमिमे राम द्वारा सीताकेँ वनवास पठयबाक रामकेँ एकटा तात्कालिक आलम्बन भेटऽ मे विलम्ब नहि भेलनि। यैह कारण छल सीता द्वारा रावणक चित्र बनाओल जयबाक।

सीताक हाथेँ रावणक मुरूत *(मैथिलीमे चित्रक लेल मुरूत शब्दक व्यवहार होइत छैक आ चित्रांकणकेँ लिखिया कहैत छैक)* लिखल जयबाक चर्चा आनो कतोक प्रकारक रामायणमे आयल छैक। जेना, रामायण मसीही भोजपूरी लोकगीत, कृत्तिवास ओ चन्द्रावती *(बंगाली-रामायण)*, सिंहली रामकथा रामायण-सार *(गुजराती)*, रामकेति *(कम्बोडिया)*, रामकियन, राम जातक, ब्रह्मचक्र, जैन-रामायण *(हेमचन्द्र)* कहावली, उपदेश-पद, सेरी-राम काश्मीरी-रामायण आ आनन्द रामायणमे सीता द्वारा रावणक चित्र बनाओल गेनाइकेँ सीता-वनवासक कारण कहल गेल छैक।

लवहरि-कुशहरिमे सेहो, रामक सीतापर क्रोधक कारण सीता द्वारा रावणक चित्र बनौनाइ कहल गेल अछि।

उक्खन ऋतुक औल बेसी भऽ गेल छैक। गर्भवती सीतारामकेँ बसात हो कै ले' ताड़क पातक एकटा बड़ सुन्नर बीयनि प्रस्तुत करैत छथि। ओकरा सुदर्शन बनाबऽ ले' ओ रंग सभक आयोजन करैत छथि। एक दिस रामक धनुष तोड़ऽक

छवि अंकित भेल अछि, ता एकटा क्यो ननदि आबि जाइत छथि आ जेना-तेना दोसर पीठपर हँसी-चौलक बीच रावणक मुरूत सीतासँ बनबा लैत छथि।

बीयनि चलैत छैक तँ बाँसक फाँफी आ बीयनिक डाँटक जोगसँ स्वर बहराइत छैक, 'कँ-काँ-काँ चिक्-चिक्-चिक्-चिक् चिका-चिका।'

ननदि बातकेँ अम्हेड़ैत छथि, "बीयनि कहैत छैक, "हा सीता कँ-काँ, हा सीता, हे सीता।"

चारू दिस अनोर उठैत छैक, बीयनि बजैत छैक, *हा सीता*। राम बीयनि मड़ क स्वर सुनैत छथि, *हा सीता*। बीयनिपर रावणक कलात्मक मुरूत देखि क फूकि दैत छनि आ ओ सीताकेँ वनवासक आज्ञा दैत छथिन।

एहि मैथिली गाथामे सीताक एक टा विशिष्ट रूप प्रकट भेल अछि। ओ अछि हुनक *वैदेही-स्वरूप*। अयोध्याक त्यागक उपरान्त सीतामे वास्तविक रूप मे विदेहक बेटी वैदेहीक गुण प्रकट होइत छनि। देह रहितो ओ आब, अयोध्याक राजरानी नहि छथि, ओ ओहि देहकेँ त्यागि क तपस्विनी वैदेही बनि गेलीह अछि। अपन देहक सुख ऐश्वर्य आ हास-विलासक कोनो इच्छा शेष नहि रहि गेल छनि हुनकामे। राम हुनका ले' आब मात्र आराध्य-देवता छथिन। देही राजा रामक प्रति हुनका कोनो आकर्षण नहि छनि। अयोध्याक राज-सिंहासन, स्वर्ण-मणि, दास-दासी आ सुख-सुविधा कोनो अर्थ नहि रखैत छथि हुनका ले'। वनवासमे, एकटा चम्पा विरिछमे सोहरल छैक चम्पाफूल। एकटा सोन-विरिछ सोझाँमे ठाढ़ छैक। सीता कहैत छथिन, "तोरा दिस तकैत डर होइत अछि हे चम्पा-विरिछ। अपन सोन-सन रूप आ सोन-मृग-छालक मोह हमर कोन-कोन धौजनि ने करौलक आ अन्तमे अयोध्याक सोना-सिंहासन त्यागहि पड़ल।"

मैथिली लवहरि-कुशहरि मे वाल्मीकि द्वारा लवकुशकेँ शिक्षा नहि भेटैत छनि। शिक्षा भेटैत छनि माइक द्वारा, बँसबाड़िसँ बोछल बाँसक सुपतीपर आ काठक पाटीपर, अस्त्र-शिक्षा भेटैत छनि, मूँजिक डोरी वला बाँसक धनुष आ सरपतक तीरसँ आ संगीत भेटैत छनि, सजमनिक तुमौड़ावला *एकतारा* पर। किन्तु, सभसँ पैघ शिक्षा भेटैत छनि जनकविद्या *(ब्रह्म-विद्या)*क आ भगवती महामाया *(तंत्र)*क आराधनाक, जाहि ठामसँ सभ महाविद्या प्रकट होइत छैक।

मकरन्दा-मलाही *(लवहरि-कुशहरि)* मे, सहस्र रावणक वध, बीयनिपर रावणक चित्र बनयबाक कारण सीताक वनवास, सीताक वैदेही व्यक्तित्व आ लवकुशक शिक्षा, लवकुशक संग राम-सेना आ रामक युद्ध, सीताक पाताल-प्रवेश आ प्रस्फुटित कमल रूपमे प्रकट भेनाइ आदि कथा बड़ क्रमवद्ध भावेँ प्रस्फुटित भेल छैक।

एहिमे पाताल प्रवेश खंड एकटा अपन अपूर्व विशेषता रखैत छैक, जकर आभास कोनो प्रकारक रामायणमे नहि आयल छैक। सीताक पाताल-प्रवेशकक उपरान्त ओहिठाम माय-माय करैत लवकुशक नोर खसैत छनि आ धरती फोड़िकऽ एकटा दिव्य कमल प्रकट होइत छैक। ओ कमल झुकि-झुकिकऽ रामक चरण स्पर्श करैत छैक आ लवकुशक माथ। राम ओकरा छूबऽ जाइत छथि तँ ओ आकाश लागि जाइत छैक आ लवकुश छूबऽ जाइत छथि तँ धरतीपर आबि जाइत छैक। ई सन्दर्भ बड़ मोहक, मार्मिक, आ मधुमय रूपमे उपस्थित कयल गेल छैक।

मैथिली *सुगी समाद (लवहरि-कुशहरि)*क एकटा दोसर स्वरूपपर, पद्म-पुराणक पाताल खंडमे वर्णित मने ओहि कथाक छाँह-छूह छैक जाहि मे :

सीताक कुमारि कालमे हुनका खेलाइ ले' एक जोड़ा सुग्गा पकड़िकऽ आनल गेल। ई सुग्गा-सुग्गी वाल्मीकि-आश्रम मे रहि चुकल छल आ वाल्मीकि-रामायणक गान करैत छल। एकरा द्वारा कुमारि सीताकेँ राम-मिलनक भविष्य-विवरण भेटलनि आ अत्यन्त प्रसन्न भेलीह, संगे सुग्गा-सुग्गीक बातपर सन्देह सेहो भेलनि। ओ सुग्गाक जोड़ा केँ कहलथिन, ''जा धरि अहाँक कहल ई कथा सत्य नहि होयत ता धरि अहाँ दुनू हमर वन्दी रहब। दुनू पक्षी मुक्तिक प्रार्थना करैत छथि। सीता मात्र नर-शुककेँ मुक्त करैत छथि। सुग्गी सीताकेँ शाप दैत छनि :

यथात्वं पतिनां सार्धं वियोजयसि मामित:

तथा त्वमपि रामेण विमुक्ता भव गर्भिणी।

आ ओ (सुग्गी) मरि जाइत अछि।

एहिसँ प्रभावित मैथिली-गाथाक अनुसार, वाल्मीकि-आश्रममे जन्म-जन्मान्तर पार करैत वैह सुग्गी आबिकऽ वनवासिनी सीताकेँ अपन पूर्व जन्मक कथा मोन पाड़ि दैत छनि आ हुनक प्रिय सखी बनि जाइत छनि। वैह सुग्गी बेर-बेर आबिकऽ कौशल्या माताकेँ वनवासिनी पुतऽहुक *(सीताक)* कुशल-समाचार कहि-कहि जाइत छनि।

सीता-सपन सेहो लवहरि-कुशहरिक एकटा फराक *(सेपरेट)* स्वरूप *(भरसन)* अछि। किन्तु, एकर कोनो क्रम नहि छैक ओ बड्ड खण्ड-खण्ड रूपमे पाओल जाइत छैक। जनश्रुति छैक जे प्रत्येक बारह-वरिसपर, चैत-राम-नवमीमे सीतादाइ अपन नहिरा जनकपुर अबैत छथिन आ कोनो श्रद्धामयी मैथिलानीकेँ अपन दु:ख-सुखक गाथा सपनामे कहैत छथिन। एहि मे कतहु सहस रावणक वध, कतहु कौशल्या-विलाप *(सीताक वनगमन कालमे)*, कतहु रामक प्रति सीताक आन्तरिक प्रेम आ

कतहु वाल्मीकि-आश्रममे तपस्विनी सीता द्वारा अपन पिता राजा-जनकक सम्मान आ महामायाक रूपमे हुनका *(राजा-जनककेँ)* श्रीविद्या देबाक विवरण अछि।

से लवहरि-कुशहरिक एहि तीनू मैथिली स्वरूपमे आन्तरिक एकरूपता निर्विवाद रूपेँ स्पष्ट छैक। कथा-विकासक शाक्त पृष्ठभूमि, वैदेही-व्यक्तित्वक भावभूमि आ मिथिलाक परम्परागत जीवन-संघर्ष ओ दार्शनिक चिन्तनक सरूप सभटा एक्के छैक। विशेषता छैक एकर सीतापर अपन नहिरा मिथिलाक संस्कृतिक गम्भीर प्रभावक छवि-छटाक।

केहनो स्थितिमे ने सीताक मोन दहलाइत छनि आ ने पयर पताइत छनि। रामक कोनो प्रतीक्षा नहि छनि हुनका आ ने अपन सुरक्षा ले' रामक आजानुबाहुएक कोनो अपेक्षा रहि जाइत छनि।

नहिराक प्रभावेँ ओ अपन दुनू नेना केँ शस्त्र-शास्त्र आ संगीत विद्याक शिक्षा देबामे सफल रहैत छथि। एकटा साधारण नारी जकाँ जीवा ले' आ अपन दुनू नेनाक पालन-पोषण करबा ले' ओ श्रम करैत छथि, किन्तु संगे अपन दुनू बेटाकेँ ओ जनक-विद्या देनाइ आ महामाया-सिद्धि *(तन्त्र)* देनाइ नहि बिसरैत छथि।

एहि तीनू मैथिली-गाथामे वाल्मीकि-आश्रमक सीताक जीवन-यापनक जे विम्ब जगता-ज्योति भेलैक अछि ओ अछि मिथिलाक एकटा कृषक-कन्याक आत्मविश्वासक संग जीवन-प्रगतिक। अपन सिनूर आ आँचरकेँ अचल ओ अक्षय रहबाक कामना करैत हुनका अपन निष्ठुर स्वामी मर्यादा-पुरुषोत्तमक प्रति कोनो उपालम्भ नहि छनि।

मकरन्दा-मलाही लवहरि-कुशहरिमे, ओकर अज्ञात लोक-गाथाकार वाल्मीकि-आश्रमक सीताक जे जीवन-क्रम, तकरा बारहमासामे बान्हि देलकैक अछि। एकर साहित्यिक आ मानवीय संवेदनकेँ स्पन्दन बड़ अधिक प्राणवन्त भऽ अयलैक अछि आ ई कोनो साहित्यक अनमोल विभूति मानल जा सकैत अछि।

सीता-गाथा अपन भूमि मिथिलाक स्वर्णिम साधना, परम्परागत सांस्कतिक ऐश्वर्य आ लोक-जीवनक सहज सौन्दर्य लेने विकसित भेल छैक। एहि मे मिथिलाक एहि महान बेटीक अदम्य सृजनात्मक प्रवृत्ति आ प्रभामय आध्यात्मिक व्यक्तित्व आलोकित भऽ उठलैक अछि।

(मिथिला मिहिर, ५ अगस्त, १९७३)



लवहरि-कुशहरि

सहसमुख रावण-वध : वनवास-प्रसङ्ग

सीता द्वारा सहसमुख रावणक बध जेना सीता-चरितकें सहसा मुख्य-रामायणसँ फराक कऽ अप्रत्याशित रूपैं हुनका *(सीताकें)* आगू आनि दैत छनि।

सहसमुख द्वारा धराशायी भेल ससैन्य राम रणभूमि मे पड़ल छथि। सहसमुख रावण अनवरत निनादकऽ रहल अछि—''आइ दशमुखक सर्वनाशक भीषण प्रतिशोध लेलहुँ। देवी, आब सातीहरणसँ हमरा के बरजि पबैत अछि ?''

रणक समाचार आ शत्रुक निनाद सुनिते सीता क्रोधसँ कारी-झामर भऽ जाइत छथि। आँखि ओरहूल भऽ अबैत छनि। हुनक सिन्दूरी आभा घोर काजर-वर्णी भऽ अबैत छनि। केश छिड़िया जाइत छनि आ अट्टहास करैत रणभूमिमे अबैत छथि। ''ठाढ़ रह, ठाढ़ रह। ठाढ़ रह घूरि ताक, घूरि ताक।'' ओ खंडा उठबैत छथि आ धराशायी राम दिस ताकिकऽ उन्मत्त भेलि रणनृत्य करैत छथि *ननर्त* जानकी देवी घोर रूपा महावला *(अद्‌भुत रामायण)* आ हुनक खंडा एना चमकैत छनि जेना उधियाइत कारी विहरियाह मेघक खंडपर अनवरत विजुरी चमकि रहल हो।

सहसमुख नाना प्रकारक माया करैत अछि तँ गरजि उठैत छथि सीता, ''रे, तौं माया की पसारैत हैं ? हम स्वयं माया थिकहुँ।''

सीताक काता *(खंडा)*क आघातसँ सहसमुख रावणक सहस मुण्ड कदम्बक फल जकाँ छिड़ियाकऽ पथार लागि जाइत छैक। युद्ध-स्थलमे विलास करैत योगिनी मे सँ एकटा योगिनी ओहि मुण्ड सभक हार गाँथिकऽ पहिरि लैत अछि आ नचैत अछि। सहस-मुख-रावणक वध भेलोपर, रंणचंडी सीताक अट्टहास आ रण-नृत्य थम्हबे ने करैत छनि। आकुल देवता सभ चतुराइ करैत छथि आ बेर-बेर सीतारामक जय-ध्वनि करैत छथि ? स्तुति करैत देवगण कहैत छथि, ''हे भगवती सीता, आइसँ लोक पहिने सीता कहत, तखन राम कहत।'' बेर-बेर सीतारामक महोच्चारण सँ सीताक दृष्टि धराशायी राम पर पड़ैत छनि। ओ अपन बामा हाथक कनगुरिया आङुर चहका *(कने चीरि)* कऽ रामक मुँहमे देलनि कि राम जीवि उठलाह। आङुर चारू

दिस झाड़ि देलनि कि जत्ते-जे छलाह, से राम-राम कहैत जीवि उठलाह। मात्र सहस्त्रमुख रावण नहि जीयल। ओकर सभटा मुण्डक माला परिरिकऽ कदम्बमालिनी योगिनी चल गेल छलैक।

राम सीता दिस तकलनि तँ ओ सीते ने। रामक मुँह देखिते सीता लजा गेलीह। लाजेँ हुनक कारी वर्ण सिन्दूरी भऽ आयल। ओ माथपर वस्त्र लऽ लेलनि आ वधूचित्त घोघ काढ़ि लेलनि। देवताक स्तुति आ अयोध्यावासीक जयजयकारसँ रामकेँ बुझबा जोकर भेलनि जे सीता सहसमुख रावणक वध कयलनि अछि।

राम सीताक प्रशंसा तँ करैत छथि, किन्तु हुनका अपनापर बड्ड लाज आ अपगरानि होइत छनि। हुनका लगैत छनि जेना सीताक जगता-ज्योति *(जाग्रत-ज्योति)*क सोझाँ ओ मलान पड़ि गेल होथि आ ओत्ते आयाससँ कयल दशमुख रावणक वध, जे हुनका विश्वविदित ख्याति, यश आ प्रतिष्ठा देलकनि, से झमान भऽ कऽ माटिमे मिलि गेल हो। ओ चँछैल स्वरमे सीताकेँ पुछलथिन, ''हे देवी, जँ अहाँमे ई प्रभा अछि तँ दशमुख रावणक हाथेँ अपन अपहरण किएक सहलहुँ ?''

सीता विनम्रतापूर्वक उत्तर देलथिन, ''हे स्वामी, अहाँक अछैत हम अपन शक्ति किएक प्रकाशित करितहुँ ? तखनुका महिमाक प्रदर्शन एकटा सती ललनाक धर्मक विरुद्ध होइतैक आ दशमुख-रावण वधसँ जे संसार भरिमे अहाँक लीलाक इजोत पसरल, से नहि भऽ पबैत। ओ तँ अहाँ धराशायी भेलहुँ तँ विश्वास भऽ कऽ हमरा संहारकारिणी-रूप धारण करऽ पड़ल। हमरामे जे तेज निहित छल तही कारणेँ अशोक वाटिकामे दशमुख रावण हमर बलात् स्पर्श करऽक दुस्साहस नहि कऽ सकल।''

राम ई सुनि लेलनि, किन्तु हुनका मोनक अपगरानि हुनका अन्तर मे ओझराइते रहलनि आ नुड़ियाइते रहलनि।

लवहरि-कुशहरिमे आनल सहस-रावण वध खण्डक उपर्युक्त सन्दर्भसँ कतोक बात स्वतः स्पष्ट भऽ अबैत अछि।

पहिल तँ ई जे एहिठाँ सीताक चरित स्वतन्त्र शाक्त सत्ताक रूपमे प्रस्फुटित होइत छैक। ई सीता, मुख्य रामायणक सीतासँ एकदम भिन्न रूपमे विकसित होइत छथि।

दोसर ई जे लवहरि-कुशहरिपर कतोक प्रकारक प्राचीन रामायण सभक प्रभाव रहितो, मैथिली लोकाचार, परम्परा आ चिन्तनक परिसर मे ई एकटा अपन विशेष सशक्त साहित्यक रूप लऽ लेलकैक अछि आ समस्त कथा, शैली आ निर्वाह पर मैथिली-छाप स्पष्ट होइत चल गेलैक अछि। तँ ई *(लवहरि-कुशहरि)* लालदास आ चन्दा झाक मैथिली रामायण जकाँ मूल-रामायणक रूपान्तर नहि भऽ कऽ एकटा स्वयं सिद्ध रचना छैक।

तेसर ई जे सहसमुख रावणक सीताक द्वारा जे वध से घटना रामक अन्तरमे अपगरानिक ज्वाला बनिकऽ धुधुआइत रहि जाइत छनि। ई सन्दर्भ बड़ कलात्मक रूपें साहित्यिक सौन्दर्यक संग दीपित कयल गेल अछि जे आगू चलिकऽ रामक द्वारा सीताकेँ वनवास पठयबाक एकटा उत्कृष्ट परोक्ष कारण बनि जाइत अछि।

मनोवैज्ञानिक कसौटीपर सीताकेँ वनवास पठयबाक एहिसँ कोनो भरिगर आन्तरिक कारण समीचीन नहि उतरैत छैक। राम सोचैत होयताह, हमर प्रतिष्ठा राख ले', अपन कनगुरिया आङुरक अमृतसँ पहिने हमरा जियाकऽ सीता हमरा संग-संग युद्ध करैत सहस रावणक वधकऽ सकैत छलीह। एकटा विजेता राजा, एकटा पुरुषोत्तम *(सुपर मैन)* आ एकटा पुरुषक अवचेतनमन *(सबकॉन्सस माइन्ड)*क अहं *(ईगो)* पर बैसल पूर्वाग्रह *(प्रेज्जूडिस)* एकटा साधारण बहन्ना *(रावणक चित्र)* पाबि कोना विस्फोट कऽ उठैत छैक, लवहरि-कुशहरिमे ई बड़ विलक्षण भावेँ उपस्थित कयल गेल अछि।

चित्र बनयबाक कथा, मिथिलाक एकटा बेटीकेँ बड़ सहज *(कॉमन)* रूपमे आँखिक सोझाँ साकार कऽ दैत अछि। बड़ स्वाभाविक पारिवारिक छवि जगजगार भऽ उठलैक अछि।

सीताक एकटा ननदि आबिकऽ सीताकेँ पुछैत छनि, ''ई ताड़क पात की करबैक ऐ भौजी ?''

सीता विहुँसैत छथि, ''अय दाइ, मोन अछि जे एहि ऊखम मे अहाँक भैया केँ डोलबऽ ले' एकटा बेना *(बीयनि)* बुनितियनि।''

''धुर जो, मैथिली सभकेँ पुरुषकेँ मोहऽ ले' कोन-कोन विद्या अबैत छैक से के कहय ? जखन अहाँ राक्षस राज दशमुख रावणकेँ मोहि कऽ अशोक-वाटिका मे झौली-झप्पस्सा दऽ कऽ बचैत रहलहुँ तखन अहाँ ककरा मे उलापि लेब।'' ननदि हँसैत छथि।

सीता सेहो हँसैत छथि, ''ताहिसँ बचबाक आन कोन बाट छलैक दाइ ?''

बीयनि बनि जाइत अछि। सीताक आदेशसँ रंग सभक मालीसभ आ तूरत पिहुआ *(पेंटिग ब्रश)* सभ आनल जाइत अछि।

''हे भौजी, आब ई कोन माया पसारने जाइत छिऐक ?'' ननदि पुछैत छथिन।

''अय दाइ, मोन जे कोनो सुघड़ी-कालक अहाँक भाइक छवि एहि बीयनिपर लिखी। से धनुष-भंग कालक हुनक *(रामक)* छवि उतारि रहल छी।'' सीता पिहुआसँ चित्र लिखैत उत्तर देलथिन।

पिहुआ सभ बेराबेरी संचारित होबऽ लागल। ननदियो एकटक्क देखैत रहलीह। आध पहरमे धनुष-भंगक छवि प्रस्तुत भऽ गेलैक। एहन सुन्नर आ एहन मोहक जे देखिते बनय।

"धूर जो ई मैथिली सभ कतेक की लूरि सिखने रहैत छैक से के कहय ? खंडा भँजैत छैक तँ करालिनी भऽ कऽ आ मुरुत बनबऽ काल मे केहन मनुखाइन भऽ जाइत छैक!" ननदिकेँ मैथिली भाउजक कलापसँ छगुनता लागि रहल छनि।

"किन्तु हे भौजी, अपन घरवलाक मुरुत तँ सभ नारीक अपन हियामे बसिते छैक। से छवि बनौनाइ कोन भारी बात भेलैक ? ककरो अनको छवि उतारि सकी तखन बुझी जे सत्ते मिथिाक बेटी छी।"

सीता रंगमे आबि गेलीह, "अहाँ जथीक मुरुत कही से हम बना दी।"

"सत्त करू।" ननदिक मुँहपर उकठास हँसी खेलाइत छनि।

"एक सत्त, दू सत्त, ब्रह्मा विसुन सत्त।" सीता सत्त करैत छथि।

ननदि ठहाका दैत छथि, "तखन एही बीयनिपर दोसर दिस दशमुख-रावणक मुरुत लिखू तँ बूझी।"

"हम रावणक मुँह कहा देखने छलिऐक ? मात्र अधक्के एक दिन अपन मुनरीक मणिमे ओकर मुँहक विम्ब देखा गेल।" सीता उदास भऽ गेलीह।

"जँ सत्त कयने हो तँ वैह बना दियऽ।" ननदि अड़ि गेलीह।

हारि-दारिकऽ सीता ओही बीयनिपर दोसर दिस रावणक मुरुत बनौलनि। मुरुत बड़ कलात्मक बनि गेलैक। हर्षे ननदि ओहि बेनाकेँ डोलबऽ लगलीह। बीयनिक डंटी, बाँसक चोङरीक स्पर्श सँ कोंकियाय लगलैक, कोँ-केँ, कि-त्त-त्ता-ता।

ननदि तकर भाष जोड़लनि, "हे भौजी, बीयनिक रावण कहैत अछि, "हे सीता, हा सीता।" ओ बीयनि लेने ओहिठाँसँ पड़यलीह आ सभकेँ कहने फिरथिन, "रानी भौजी बुनलनि एकटा बीयनि। ओहि पर आँकलनि दशमुख रावणक छवि। ओ बीयनि जखन डोलैत छैक तँ कहैत छैक, हे सीता, हा सीता।"

राम जखन ओहि बीयनिकेँ देखलनि तँ तामसे फूकि देलकनि, "अयँ, एक्के बीयनिपर हमरे संग रावणोक मुरुत। तखन सीताक लेखेँ तँ हमरा आ रावणमे कोनो अन्तर नहि ?"

ओ बीयनि डोलौलनि तँ हुनको वैह बुझयलनि जे बीयनिक रावण करुणा करैत छैक, हे सीता हा सीता। रामक आँखिमे बिढ़नी-पचहिया उढ़ऽ लगलनि। ओ लछुमनकेँ बजाकऽ वोनमे सीताकेँ छोड़िकऽ घूरि अयबाक आज्ञा देलथिन।

"भगवतीक देह भारी छनि, कल्याणक योग्यता छनि।" लछुमन हाथ जोड़ैत छथि।

"आज्ञाक पालन हो।" राम ठनकैत छथि। हुनका अन्तरक ग्लानिकेँ बमछिकऽ बहरायबाक अवसर भेटि जाइत छनि।

रामक आज्ञाक पालन करबा ले' लछुमन चोट्टे बिदा भऽ जाइत छथि।

लछुमनक मुँहसँ, रामक द्वारा अपन वनवास जयबाक आज्ञा सूनिकऽ *लवहरि-कुशहरि* क सीता कनैत नहि छथि। शान्त भावेँ ओ अपन शरीरपरक एकहकटा गहना उतारि लैत छथि। एक्कोटा विस्सू-बन्हन नहि रहि जाइत छनि हुनक देहपर। पहिल वनवासक कालमे सती अनुसूइयाक देल एक जोड़ अक्षय साड़ीमेसँ एकटा पहिरैत छथि आ एकटा चौपेतकऽ हाथ कऽ लैत छथि।

ओ लछुमनकेँ कहैत छथिन, "बौआ लछुमन, हम अयोध्याकेँ कहिया सोहेलिऐक? हाथक वैवाहिक रंग सुखयबो ने कयल छल तँ अहाँ दुनू भाइक संग वनकेँ विदा भऽ गेलहुँ आ आइ जखन सन्तानवती होइ ले' जा रहलि छी तँ कलंकिनी कहाकऽ वनवास पठौल जा रहल छी। स्मरण राखू बौआ, धर्म धर्मे थिकैक। कोनो-ने-कोनो दिन ओ स्वत: प्रकट होयबे करतैक। आब धर्मे हमर आश्रय अछि आ धर्मे हमर रक्षक। भलेँ निभेर रातिकेँ ई आज्ञा सुनौलहुँ। ने अयोध्या हमर मुँह देखत आ ने हम अयोध्याक मुँह देखि सकब। आइसँ हम विदेह राजक बेटी यथार्थे वैदेही छी। गेह आ देहकेँ तँ बिसरि जेबैक, किन्तु अहाँ लोकनिक नेह नहि बिसरल जयतैक। आइसँ प्राणनाथक दर्शन हमरा अपने अन्तरमे होयतैक आ ठोरपर हुनक नाम रहतैक। पतिसँ हमरा आर किछु नहि चाही। चलू बौआ, लछुमन, शीघ्रे हमरा एहि राजभवनक कोहमोह आ धुआँ-धधरासँ फराक लऽ चलू। हमर सोहाग अक्षय हो। अहाँ सभ निकेँ-सुखेँ रही। हम आब मात्र वैदेही छी।"

लवहरि-कुशहरि क सीताक जाहि जाज्वल्यमान राममुक्त आ ऐश्वर्य-मुक्त वैदेही व्यक्तित्वक विकास वाल्मीकि आश्रममे भेल, सहस-मुख रावणक वध आ वनवासक प्रसंग ओहि सशक्त कथाक पूर्वाभ्यास-वातावरणक रूपमे कलात्मक भावेँ चित्रित भेल अछि। एहिसँ आगू जे वैदेही स्वरूप छविमय भेल अछि, तकरा पाबिकऽ संसारक कोनो साहित्य आ इतिहासक पन्ना सहजेँ स्वर्णिम भऽ जा सकैत अछि।

(मिथिला मिहिर, २ सितम्बर, १९७३)



लवहरि-कुशहरि
सीताक जीवन-संघर्ष

रोविन्सन क्रूशो अंग्रेजी-साहित्यक अमर रचना मानल जाइत छैक। एकर मर्यादा विश्व-साहित्यक कोटिक छैक। अंग्रेजी-साहित्यकेँ एहि बातक गौरव छैक जे एहि प्रकारक एकाकी जीवन-संघर्षक रचना कोनो आन साहित्यकेँ नहि छैक।

अंग्रेजी साहित्यपर समुद्री-परिसरक विपुल प्रभाव। नाटकमे झंझावात *(टेम्पेस्ट)* आ काव्यमे कोलरिजक *ताहि दिनक समुद्री (एनीसेन्ट मेरीनर)* सागर-वातावरणक कालजयी रचना छैक। हेमनिपरक *हेमिंगवे* क उपन्यास *बूढ़गोढ़ि आ सागर (ओल्ड मैन एण्ड द सी)* विश्व ख्यातिप्राप्त कयलकैक अछि।

से *रोविन्सन क्रूसो,* सागर-साहित्यक मोती थिकै। झंझामे एकटा जहाज ध्वस्त भऽ जाइत छैक। आरोही मे सँ एक व्यक्ति *रोविन्सन क्रूसो* एकटा तख्तापर भासैत एकटा निर्जन द्वीपमे लगैत छथि। हुनक भग्न जहाज एक-एकटा कऽ आरोही गमा कऽ सेहो ओही द्वीपक समीप आबि चट्ट दऽ बैसि जाइत छनि।

एहि भग्न-जहाजसँ क्रूसोकेँ अधिकांश जीवनोपयोगी सामग्री प्राप्त होइत रहैत छनि। एहिसँ ओ कूड़हड़ि, खंती, रस्सी, पाल आ कारतूस आदि बेर-बेर आबि कऽ लऽ लऽ जाइत छथि। ई जहाज हुनक बड़का आलम्बन छनि। जँ एहि जहाजक परिकल्पना नहि कयल जाइत तँ क्रूसोक जीवन-संघर्ष असम्भव भऽ जैतनि।

क्रूसो ओहि द्वीपमे जीवाक ओरियौन करैत छथि। एकाकी रहितो ओ एकसरे घर-घरुआर, शिकार, भोजन-संचय, खालक वस्त्र बनौनाइ आ सुरक्षा-प्रबन्धक सभ टा काज करैत छथि।

पाश्चात्य संस्कृति आ साहित्यमे जे स्थान सागरक, अरबी-फारसी साहित्यमे जे रुतवा मरुभूमिक ओहि सभसँ पैघ महत्व भारतीय संस्कृति ओ साहित्य मे अरण्यक। वेद, उपनिषद, महाभारत, रामायण, वृन्दावन-साहित्य अथवा लोकगाथा सभ ठाँ वन-यात्रा, वनवास, वन-विपत्ति, वन-रोमांस आ वन-वर्णन भरल पड़ल छैक।

लवहरि-कुशहरिक सीताकेँ, गृहहारा आ समाज-विच्छिन सीताकेँ, आश्रय भेटैत छनि वाल्मीकि-आश्रमक एक टा कुटीरमे। वाल्मीकि आश्रम तपसी-आश्रम छैक, कोनो राजा वा गृहस्थक निवास स्थान नहि।

से एहि गाथाक सीता ले' वाल्मीकि-आश्रमक ओतबे महत्व छैक जत्ते महत्व रोविन्सन क्रूसो लेल लगक ओहि जहाजक। आर जत्ते जीवन-संघर्ष, से सीता केँ स्वयं करैत रहऽ पड़ैत छनि।

रोविन्सन-क्रूसो जे संघर्ष करैत छथि, तकरा ले' ओ थोड़ बहुत अभ्यस्त जकाँ छथि। हुनक संघर्ष शारीरिक स्तरपर छनि। तिल-तिलकऽ जरबऽला कोनो ग्लानिक घूड़ हुनका अन्तर मे कह-कह नहि कऽ रहल छनि। ओ मात्र जीबऽ ले' जीबैत छथि।

सीताक जीवन-संघर्ष शारीरिक ओ मानसिक दुनू-स्तरपर छनि। लोकप्रसिद्ध जनक-तनया आ चक्कवइ *(चक्रवर्ती)* पुरुषोत्तम रामक पत्नी सहसा एकटा साधारण नारी, एकटा सर्वहारा नारीक असहाय ओ कलंक-दागल जीवन जीबऽ ले वाध्य कयल जाइत छथि। किन्तु अपन सतीत्व ओ नारीत्वक प्रति हुनक आत्मविश्वास अजेय अछि। ओ ने टूटैत छथि, ने विचलित होइत छथि ओ ने अपनामे दैन्यकेँ आबऽ दैत छथि। ओ अपन पिता महाराज जनकक आश्रयकेँ सेहो नहि ठेकनबैत छथि। एहन भीषण क्षणमे *(जेना कि सहज छैक)* ओ आत्महत्या करबाक सेहो नहि सोचैत छथि। हुनका अपन भावी सन्तानकेँ, जन्म देबाक, पालन करबाक आ तकरा महान बनयबाक लालसा अदम्य छनि। एहि महान उद्देश्यक पूर्त्ति ले' कोनो स्थिति आ केहनो परिस्थितिसँ जूझऽ ले' ओ प्रस्तुत भऽ जाइत छथि। ओ अपना सम्बन्धमे सतत जागरूक छथि। आ मिथिलाक एकटा साधारण बेटी जकाँ संघर्षरत भऽ जाइत छथि।

''रातुक तेसर पहर बीति रहल छैक। अन्हारगुज्ज राति। वाल्मीकि-आश्रम मे दगरिन कतऽ ? साँझे सँ सीताकेँ प्रसव-वेदना भऽ रहल छनि। तपसिन वाला सभ जुटलि छथि। आधा रातिसँ अधिक समय बितलैक तँ सीताकेँ जौआँ पुत्र-रत्न जन्म लेलकनि। तपसिन सभ यज्ञालयक समिधाक धधकैत जारनि आनिकऽ तकर इजोतमे नेना दुनूक मुँह देखैत छथि आ सीताकेँ देखबैत छथि। सीताक अन्तरक सभ टा ताप जेना मेटा जाइत छनि, किन्तु तपसिन सभहिक आँखि झहरऽ लगैत छनि, जाहि नेना सभक मुँह आइ मणिज्योतिमे निहारल जाइत, तकर मुँह जारनिक इजोतमे देखि रहल छी। जकर जन्म-उत्सव मे दमामा बाजा बजैत तकर जन्म-उत्सवमे सिंह गरजि रहल अछि आ वन-हाथीक मत्त हैंज चिघाड़ कऽ रहल अछि।''

एकटा वृद्धा तपसिन बुझबैत छथिन, ''दाइ, पुत्र-रत्न सभ ठाँ महारत्न होइत छैक। भगवती कहुना अक्षय आयु देथुन।''

लवहरि-कुशहरिक अज्ञात रचनाकार बारहमासामे, सीताक जीवन-संघर्षक विमोहक चित्रावली उपस्थित कयलनि अछि।

''मुसलधार वर्षा भऽ रहल छैक। काजर-घोरल रातिमे प्रचण्ड बिहाड़ि बहैत। वोन सौंसिया रहल छैक आ वसात फौंफिया रहल छैक। रहि-रहि कऽ कड़-कड़ ध्वनिक संग बिजलौका छिटकि उठैत छैक। दादुर आ झिंगुर तँ अनोर उठौने छैक। अपन दुनू नेनाकेँ छातीसँ सुटकौने सीता टकटक अन्हार दिस ताकि रहलि छथि। कखनो ऊठि कऽ आगि धधका लैत छथि। जे कोम्हरोसँ कोनो वन-जन्तु ने आबि जाय!''

''बड़ प्रचण्ड राति छैक। जाड़े वोनक पातकेँ मर्र-मर्र करबाक ध्वनि आबि रहल छैक। धोन *(कुहेस)* मे वोन जेना हेड़ा घेल छैक। सीता घूड़ जोड़ने दुपहरिया रातिमे घूड़ तापि रहलि छथि। दुनू नेना पुआरपर छनि ओ वनवासी भेड़िहरक देल कम्मल ओंढ़ने निभेर सूतल छैक। सीताकेँ होइत छनि जे नेना दुनू जड़ाइत ने हो तँ ओ अपन साड़ी दोवर कऽ सेहो ऊपरसँ ओढ़ा दैत छथिन आ आर काठी लगाकऽ घूड़केँ जुआन करैत छथि।''

वैशाखक प्रचण्ड दुपहरिया आ मोचण्ड रौद। वोनमे किछु दूर जाय पड़ैत छनि सीताकेँ पानि आनऽ ले'। उखम मे पानि बेसी निघटैत छैक। ओही दुपहरिया मे सीता घैल माथपर आ दोसर घैल काँखतर। ओ घुरलीह तँ देखैत छथि जे दुनू नेना रौद मे लट्टा-पट्टी करैत घामे नहा गेल छथि। हाँइ-हाँइ कऽ घैल रखलनि। दुनू नेनाकेँ पकड़िकऽ अपन आँचरसँ घाम पोछलनि आ लगमे बैसाकऽ बेना डोलबऽ लगलीह।

कने सीताक दैनिक जीवनक झाँकी देखू।

''एक भिनसरवे जे उठलीह से वोनसँ साग-पात आ फल तोड़ि कऽ तपसिन सभक संगे घुरलीह। दुनू नेना जेना बाट तकैत छलनि। हुनक-गायक दुहनिहार गोपाल आबि तुलयलनि। कुश-तकरा हाथमे डाबा देलथिन आ कुश गायक आगू मे घास-ओगारि देलथिन। गाय दूहल जाय लगलैक आ लगले डाबा भरि गेलैक। सीता डाबा लऽ कऽ पाँच धार दूध कुलपुरुष सूर्यकेँ ढारि देलनि *(मने सूर्यादि पंचदेवताभ्यो नमः)*। एक धार पितर केँ आ एक धार पतिक नामे धरती पर खसौलनि। लव आ कुश आगू-पाछू लपटऽ लगलथिन, माय, मधु मिलाकऽ दूध नहि देब तँ नहि पीयब।''

''सीता जारनि तोड़ि कऽ घुरलीह तँ दुनू नेना माटिपर निभेर सूतल। हबर-हबर कऽ सीता जारनिक बोझ पटकलनि। दुनू नेनाकेँ हँसोथि-पँसोथि कऽ उठौलनि

आ आनिकऽ पटियापर सुता देलथिन। दुनू भाइ जागि गेलाह आ मायकें कहलथिन, ''केहन तँ नानीक कोरमे सूतल छलहुँ! अहीं ने कहैत रहैत छी जे धरती हमरा सभक नानी छथि।''

नेना सभ छेटगर भेलाह तँ एक दिन दू टा सिंह शावककें पकड़ि कऽ आश्रम लऽ अनलनि। सिंहनी दीन भेलि ओकरा संग आबि गेलि। ओहि दुनू नेनाक साहस आ तेजक सन्मुख अवनत भेलि।

''छोड़ि दियौ दुनू शावककें। अहाँ लोकनिक संगी ऋषिकुमारलोकनि डेरा जयताह। आश्रम-मृग सभ हड़कि जायत। देखियौ ने, ओकर माय कोना हुँकारि रहल छैक अपन दुनू नेना ले' हमरे जकाँ।'' सीता कहलथिन।

ओ लव आ कुशक पाँजसँ दुनू शावक लऽ कऽ सिंहनीक आगूकऽ देलथिन। सिंहनी हलसल-फुलसल चलि पड़लि आ घूरि-घूरि पाछू ताकय।

''सिंहनी घूरि-घूरि पाछू किएक तकैत छै' माय ?'' कुश पुछलथिन।

सीता विहुँसलीह, ''ओकरा होइत छैक जे ओकर बच्चाकें अहाँलोकनि फेर ने छीनि लिऐक।''

लव गम्भीर भऽ गेलाह, ''अहाँ कहने छी जे हम सभ रघुवंशी थिकहुँ। से हमरालोकनि सूर्यवंशी भऽ कऽ देल वस्तु कोना फेर लेबैक ?''

सीताक करेज सूप-सन भऽ गेलनि।

ओहि दिन सीता बड़ भोरे ओहि दुनू नेनाकें उठा कऽ स्नान करौलनि आ अपने स्नान कयलनि। कुमारि बाछीक गोबरसँ ठाँ कयलनि। ताहिपर जल भरल-कलश राखिकऽ ओहि पर आमक पल्लव रखलनि आ ताहिपरसँ जरैत दीप रखलनि। नेना लोकनिकें वल्कल धरिया पहिरौलनि। ललाटकें चाननसँ चर्चित कयलनि। फुलडालीमे फूल लोढ़िकऽ अनलनि। पहिने कुलदेवीक पूजा कयलनि, तखन कुलक बीज-पुरुष सूर्यक धूप, दीप, नैवैद्य, ताम्बूल, पुष्प आ जलसँ आराधना कयलनि। तखन दुनू नेनाकें संग कयने वाल्मीकि ऋषिक समक्ष अयलीह। प्रणिपात कऽ हुनक सम्मान आ अभिनन्दन करैत निवेदन कयलथिन, ''हे दिव्य, हे तपोधन, हे गुरुवर, ई दुनू नेना छेटगर भेलाह। अपनेक पुण्यमय हाथे, हिनका लोकनिकें अक्षर आरम्भ कराओल जाइनि जाहिसँ ई दुनू अक्षय शील, शौर्य आ यशक भागी भऽ सकथि।''

दुनू नेना ऋषि वाल्मीकिकें प्रणिपात कयलनि। ऋषि बहुत शिष्यक संग, हवनक सामग्री लेने आ हुनकालोकनिकें संग कयने सीताक कुटीपर अयलाह।

सीताक आँखि भरि-भरि आबनि जे आइ ऋषिकें दक्षिणा की देबनि ? वेद-ध्वनि आ हवनक उपरान्त दुनू नेनासँ 'ओ ना मा सी धं', लिखाओल गेलनि।

सीता पाँच टा फूल, आ पाँच पात पान वाल्मीकिक चरण मे अर्पित करैत कल जोड़ि कऽ बजलीह, ''हे महातप, हम की दक्षिणा दियऽ ? एहि दुनू क्षत्रिय-कुमारक प्रथम अर्जन, आजुक दक्षिणास्वरूप एहि पुण्य-चरणपर समर्पित होयत।''

से बिसरि जाउ जनक-नन्दिनी जानकीकेँ, बिसरि जाउ, अयोध्याक राज-राजेश्वरी सीताकेँ, ताहि वाल्मीकि-आश्रमक सीतामे आ लवहरि-कुशहरिक सीता मे एकटा दृढ़प्रतिज्ञ संघर्षमयी सर्वहारा नारीक दर्शन होयत। सर्वहारा होइतो ई सीता आत्म-विश्वासहारा आ दिशाहारा नहि छथि।

रोबिन्सन क्रूसोक जीवन-संघर्षसँ वनवासिनी सीताक जीवन-संघर्ष भिन्न कोटिक छनि आ दीप्तिमान छनि। क्रूसो मात्र जीबऽ ले' जीबैत छथि। सीता जीबैत छथि श्रेष्ठ कोटिक सन्तानकेँ श्रेष्ठ कोटिक मानव बनाबऽ ले'।

से लवहरि-कुशहरिक एहि कोटिक स्वाभिमानी पत्नी, संघर्षशील नारी आ महीयसी आ जागरूक माइक एहन आलोकमय चित्रण दीप लऽ कऽ तकलोपर विश्व-साहित्यमे नहि भेटत। दु:खक विषय थिक जे हमरालोकनि एखनो धरि महान कंठ महागाथाकेँ अक्षर पंक्ति मे परिणत नहि कऽ सकलहुँ अछि।

(मिथिला मिहिर, ७ अक्टूबर, १९७३)



लवहरि-कुशहरि : सीता-तत्व

शरीर हर थीक। इन्द्रिय आवेग बड़द, मोन लागनि, आत्मा हरवाह, ज्ञान फार आ तइ फारक नोक चेतना सीता भेली। अइ सीता सँ जीवन क्षेत्र मे कर्मक जे सिरौर बनतइ तइ सँ जीवन, श्री, शक्ति आ ऐश्वर्यमय हैत। यैह तत्व भेल-सीता तत्व।

समस्त सृष्टिक समग्रता कैँ अपना मे विन्दु केन्द्रित कऽ तइ मे सर्वात्मा रामक सतत दर्शन करैत रहनाइ भेल--सीता-तत्व।

मातृत्व, जे अपना सन्तान कैँ अपना वक्षक दूध द्वारा शक्ति, नयनक नोर द्वारा प्रेम आ कंठक वाणी द्वारा ज्योति सम्पन्न करैत ओकरा जीवन संग्राम सँ कुशल आ विजयी बनैक क्षमता प्रदान करैत अछि, सैह भेल—सीता तत्व।

अइ सीता तत्वक साधना सँ मानव स्वयंपूर्ण, स्वयंसिद्ध आ स्वयंप्रभ होइत अछि।

(कर्णामृत, अप्रैल-जून, १९८७)



लवहरि-कुशहरि

अश्वमेघ यज्ञक अश्व कोना भेटलै ?

दुनूक साधना दू प्रकारक रहलनि। एक गोटे योगक उपदेष्य। योग हुनका हस्तामलक छलनि। चित्त निरोध पथक पथिक। हिनका गतिविधिक संग जगत-विख्यात ईक्ष्वाकु कुलक इतिहास जुटल छल।

समय आ समस्याक केहेन-केहेन महातरंग द' कै ई अयोध्याक राजकुलक नौका कै दिव्य निर्देशन लैत रहल छला।

एकटा योगी जे भोगी लोकनिक पथ-प्रदर्शक रहला।

दोसर महाद्रष्टाक साधना, साहित्य-साधना छलनि आ काव्य-साधना छलनि। किन्तु से विश्व कवि कोनो राजकुल सँ सम्बन्धित नहि छला। अपन यज्ञ छोड़ि कोनो अनका यज्ञ सँ सम्बन्ध नहि छलनि, ककरउ सँ कोनो पौरोहित्य सम्बन्ध नहि। संगीत हिनक प्रिय विषय आ अपन काव्यक गायन बड़ प्रिय। संगीत वा काव्यक जे स्पन्दन आ जे योग सैह हुनक योग छलनि। स्वाध्यायक जे उल्लास सैह हुनक आनन्द छलनि।

आर्यावर्त अइ दुनू मनीषी कैं पाबि अपना कैं धन्य मानैत छल।

एकटा छला मूर्तिमान योग तँ दोसर छला साकार काव्य। एकटा पौरोहित्य क्रमक तँ दोसर संगीत कलाक मर्मज्ञ।

से दूनू महामुनि वशिष्ठ आ वाल्मीकि एक दोसरक प्रति आदर, श्रद्धा आ प्रेम मे उबल-डूबल।

''ई एकटा दिव्य सुयोग रहल जँ भगवती सीता अइ पुण्यमय सिद्धपीठ मे आबि गेली आ हुनक दुनू पुत्र रत्नक शिक्षा-दीक्षा महामुनिक करुणामय निर्देशन मे भेल। यज्ञ अश्व हुनका दुनू भाई द्वारा पकड़ल गेनाइ आ ताहि हेतु अयोध्या सँ भीषण युद्ध मे विजयी भेनाइ दुनू भाइक हेतु महापरीक्षा छल। अइ मे ई लोकनि उज्ज्वलतापूर्वक उत्तीर्ण भेला। ई सबटा अपनैक पुण्य प्रभाव छल।'' वशिष्ठ कहलथिन।

विहुँसि देलनि वाल्मीकि—''शस्त्र, शास्त्र, सिद्धि, तत्व आ नीति सब प्रकारक श्रेयस्कर शिक्षा हुनका लोकनि कैं भगवती सीते सँ प्राप्त भेलनि। ब्रह्मवादिनी शुकी, ब्रह्मवादिनी सुचित्रा आ भैरवी सर्वमंगला अइ दिव्य काज मे भगवतीक सहायिका छलथिन। ओना ओ दुनू आयुष्मान हमरउ सँ विधिवत शिक्षा ग्रहण केने छथि।''

''ई युद्ध तँ शुद्ध के परिचयक अभाव कारणेँ भेल ?'' वशिष्ठक प्रश्न छल।

''भगवती सीताक अन्तर मे ककरो प्रति तिलमात्रो प्रतिशोधक भावना नहि रहैत छनि। हुनक आत्मविश्वास, स्वाभिमान आ अपना सन्तान कैं श्रेष्ठतम मानव बनबैक आकांक्षा महान रहल। बाँसक सुपती बीछि-बीछि ओइ पर ओ अपना दुनू पुत्र कैं अक्षर ज्ञान देल। भील बालकक धनुष पर शस्त्र शिक्षा देल आ अपन तपस्याक प्रभावैं आध्यात्मिक विद्या देल। वैदेही-वैदेही छथि, जानकी वस्तुत: महाराज जनकक ज्ञान सँ गरिमा मण्डित छथि आ मैथिली सीता सुनिश्चिे मैथिली साधनाक साकार मूर्ति छथि। चुट्टियो पिपरीक प्रति हुनका करुणा रहैत छनि। युद्धक आकांक्षी ओ कखनहुँ नहि। ई युद्ध तँ नेना लोकनि खेल कोतुक मे कै लेलनि'' —वाल्मीकि बजला।

ई तँ अपूर्व परिचय रहल ओइ दुनू नेनाक। हे महातप, ई दूनू आब अयोध्या कैं कोना प्राप्त भै सकताह से कहल जाए। रघुकुल तिलकक यैह आकांक्षा छनि जे लव आ कुश अयोध्या राजभवन कैं आलोकित करथि। समस्त अयोध्यादल मे हर्षक पारावार लहरा रहल छैक। ओहि छविक वर्णक, ओहि वाणीक विवरण आ ओहि शौर्यक स्मरण चलि रहल छैक। की भगवती सीता अयोध्या कैं अपन नेना देनाई स्वीकार करती अथवा मन मे कोनो भाष हेतनि ?'' वशिष्ठ कहैत छथिन, ''अयोध्या कैं अपनेक बड़ भरोस छैक। ईक्ष्वाकु वंशक कतोक चक्रवर्ती सम्राट कैं हम बाल रूप मे देखने छी। किन्तु एहन महिमामय किशोर सब आइ धरि नहि भेटल छला। तैं हे तपोधन, हमर बेर-बेर विनय जे ई दुनू वंशधर रघुकूल कमल दिनेश कैं प्राप्त होनि।''

गम्भीर भै बजैत छथि वाल्मीकि, ''हे देव, हे राजगुरु, हे योगेश, ई सबटा भगवती सीताक प्रसन्नता पर निर्भर करैत छनि। मातृभक्त कुमार लोकनि बिनु मायक अयोध्या गेनाइ स्वीकार करता वा नहि! हुनका लोकनि कैं अही वयस मे अपन बाहुबलक अजस्र विश्वास भै एलनि अछि। तैं हे महामुनि, अनायासिक राज्य लाभक सुखक प्रति ओइ दुनू भाइक आकर्षण हेतनि वा नहि। तैं हमर सम्मति जे सब क्यो भगवती सीताक समक्ष उपस्थित भै वनवासक आज्ञा जनित खेद के पोछि दियनि ओ अनुरोधपूर्वक हुनका सँ अयोध्याक राज सिंहासनक उत्तराधिकारी माँगी।''

आदि कविक अन्तर मे स्पष्ट भऽ एलनि जे राजगुरु महामुनि वशिष्ठ भगवती सीताक वनवासक अवधि समाप्त कै हुनका घुरा कै अयोध्या लै जाइक कोनो चर्च नहि उठा रहल छथि।

वशिष्ठक स्वर मे चिन्ता छलनि, ''बड़ पैघ प्रतिष्ठाक प्रश्न उठि एलनि अछि अयोध्याक सम्राट कैं। जौं कुमार लोकनि यज्ञ अश्वदेवा सँ अस्वीकार कै देलथिन, अइ अश्वमेघ यज्ञक तखन की हैत ?''

बिहुसि देलनि आदि कवि, ''प्रत्येक पिता अपन पुत्र सँ आ प्रत्येक गुरु अपन शिष्य सँ पराजित हेबा मे गौरवक अनुभव करैत अछि। रघुकुल तिलक यज्ञक सुयशक भागी हेबे करताह। मात्र एतबे जे अयोध्या दिस सँ भगवती सब प्रकारेँ सम्मानित कैल जाथि।''

(कर्णामृत, जुलाई-सितम्बर, १९९०)

